पद ११९

(राग: देस - ताल: त्रिताल)

मग भवभय त्यासी बाधी कैसें।।ध्रु.।। अंतरीं राम बाहेरी राम। हेंचि प्रतीति जयासी असे।।१।। दृश्य पदार्थ अशाश्वत मानुनी। आत्मारामीं डोलतसे।।२।। माणिक म्हणे या रीतीचा योगी। संसारी परि लिप्त नसे।।३।।